मुख्य बातें

1. 'भारत में अनुसूचित वाणिज्य बैकों की मूलभूत सांख्यिकीय विवरणियां', इस प्रकाशन का चालिसवां खंड, 31 मार्च 2011 की स्थिती के अनुसार बी.एस.आर 1 और 2 सर्वेक्षणों के जरिए संकलित किए गए आंकडों पर आधारित हैं। इसमें क्षेत्रिय ग्रामीण बैंकों और अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के 92,117 कार्यालय शामिल किये गए हैं। ये विवरणियां भारत के अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की प्रत्येक शाखा/कार्यालय द्वारा प्रस्तुत करना अपेक्षित है। इसका मुख्य निष्कर्ष, जो इस प्रकाशन के अंतिम आंकड़ों पर आधारित है, यहाँ दिया जा रहा है।

अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का बकाया ऋण :

2. कुल बकाया ऋण में वृद्धि :

- मार्च 2011 की अंतिम स्थिति के अनुसार अनुसूचित वाणिज्य बैंको का कुल बकाया ऋण ₹ 40,756,470 मिलियन था। यह वृद्धि 21.8 प्रतिशत की है जबकि पिछले वर्ष इसमें 17.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। (सारणी सं. 1.3)

- उधार खातों की संख्या वर्ष 2010* के 119 मिलियन से 1.8 प्रतिशत बढ़कर वर्ष 2011* में 121 मिलियन तक हो गई है। (सारणी सं. 1.3)

चार्ट 1 : अनुसूचित वाणिज्य बैंको का बकाया ऋण 1992 से 2011 तक

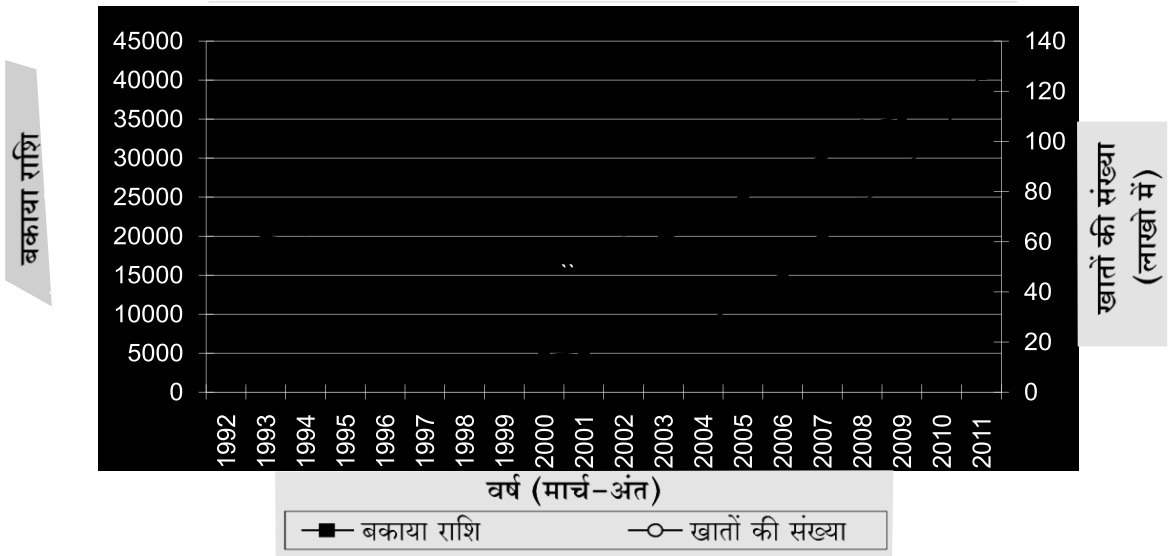

3. जनसंख्या समूहवार ऋण का वितरण :

- 2011 में महानगरीय और शहरी केंद्रों में ऋण की वृद्धि उच्चतम याने 22.4 प्रतिशत प्रत्येकी है। उनका अनुसरण करते हुए अर्ध-शहरी केंद्रोंमें 19.3 प्रतिशत ऋण की वृद्धि दर्ज की गयी। ग्रामीण केंद्रोंमें 2011 में ऋण की वृद्धि 18.7 प्रतिशत हो गयी।

---

* 2011 तथा 2010 की अवधि के संदर्भ का अर्थ क्रमश: मार्च 2011 और मार्च 2010 की अंतिम स्थिति लिया गया है।

- 2011 में वृद्धिशील ऋण में, महानगरीय केंद्रों का हिस्सा उच्चतम रहा जो 68.0 प्रतिशत था। शहरी, अर्ध-शहरी, ग्रामीण केंद्रों का हिस्सा क्रमश: 17.2, 8.4 और 6.4 प्रतिशत रहा।

4. बैंक समूहवार ऋण का वितरण :

- कुल बैंक ऋण में राष्ट्रीयकृत बैंकों का हिस्सा 2010 के 52.0 प्रतिशत की तुलना में बढ़कर 2011 में 53.0 हुआ। तदनुरूप एस.बी.आइ समूह का हिस्सा जो 2010 में 23.1 प्रतिशत था घटकर 2011 में 21.9 प्रतिशत हो गया। अन्य बैंक समूहों का हिस्सा लगभग पिछले वर्ष जितना रहा। (सारमी सं. 1.4)

- राष्ट्रीयकृत बैकों ने वर्ष 2011 में 24.3 प्रतिशत की उच्चतम ऋण वृद्धि दिखाई है और उसका अनुकरण करते हुए नीजी क्षेत्र के बैंकों ने 23.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। स्टेट बैंक और उसके सहयोगी बैकों ने और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों ने वर्ष 2011 में क्रमश: 15.3 और 18.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। वर्ष 2011 में विदेशी बैंकों ने ऋण में 21.0 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है।

- 2011 में वृद्धिशील ऋण में स्टेट बैंक और उसके सहयोगी बैंकों, राष्ट्रीयकृत बैंकों तथा निजी क्षेत्र के बैंको का हिस्सा क्रमश: 16.3, 57.8 और 19.2 प्रतिशत रहा है।

5. बैंक ऋण का क्षेत्रवार (व्यवसाय के अनुसार) परिनियोजन :

- कुल बैंक ऋण में कृषि क्षेत्र का हिस्सा वर्ष 2010 के 11.7 प्रतिशत की तुलना में 11.3 प्रतिशत हुआ है। उद्योग ऋण का हिस्सा 2011 में मध्यम स्वरूप से घटकर 39.6 प्रतिशत हो गया जो 2010 में 40.5 प्रतिशत थी। (सारणी 1.11 और चार्ट – 2)

- 2011 में कुल बैंक ऋण में व्यक्तिगत ऋणों के हिस्से में पिछले वर्ष के 16.7 प्रतिशत से 16.4 प्रतिशत तक गिरावट पाई गई है।

- वित्त के ऋण का हिस्सा वर्ष 2010 के 7.3 प्रतिशत की तुलना में 2011 में बढ़कर 8.6 प्रतिशत हो गया है।

6. क्षेत्रवार (व्यवसाय के अनुसार) ऋण वृद्धि :

- कृषि के बैंक ऋण का विकास दर पिछले वर्ष के 26.1 प्रतिशत की तुलना में 2011 में 18.1 प्रतिशत तक घट गया। (सारणी 1.9)

- उद्योग ऋण की वृद्धि में गिरावट होकर 2010 की 19.5 प्रतिशत की तुलना में यह वृद्धि 2011 में 18.9 प्रतिशत की रही।

- व्यक्तिगत ऋण में वर्ष 2010 के 1.0 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में वर्ष 2011 में 19.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। आवास ऋण जो व्यक्तिगत ऋण का एक भाग है, पिछले वर्ष के 7.6 प्रतिशत की तुलना में इस साल 12.9 प्रतिशत तक बढ़ गया। शिक्षा ऋण 2011 में 22.4 प्रतिशत से बढ़ गया।

चार्ट 2 : कुल बैंक ऋण का क्षेत्रवार उपयोग

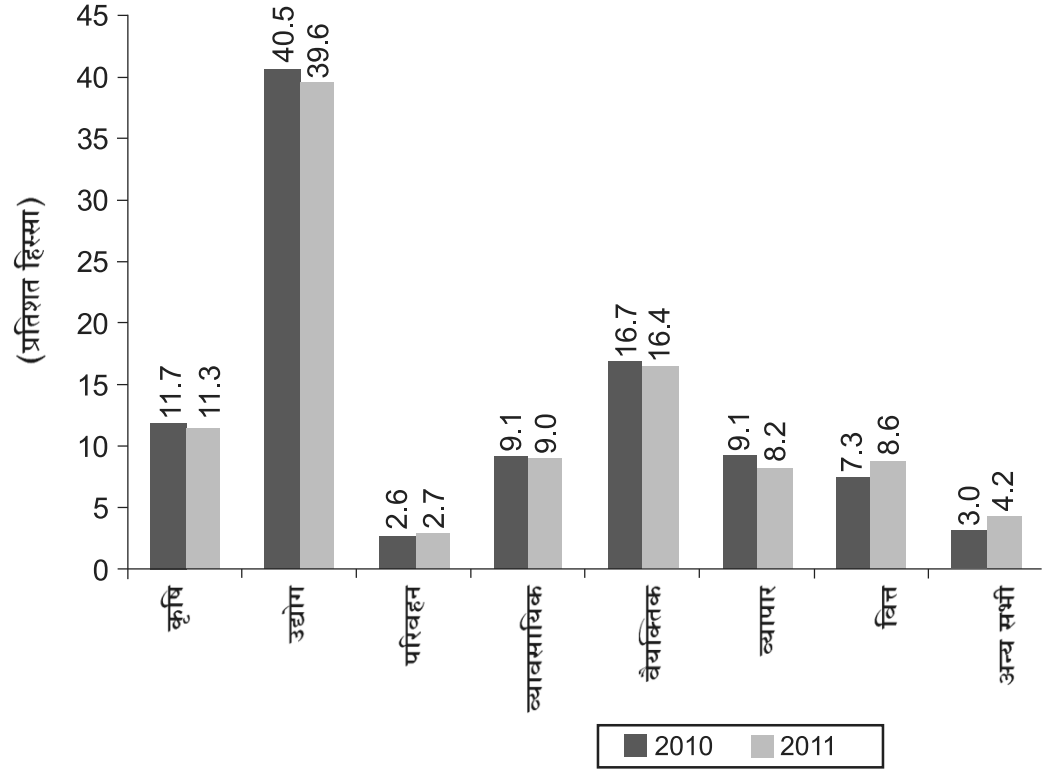

7. क्षेत्रीय (व्यवसाय के अनुसार) हिस्सा- वृद्धिशील बैंक ऋण में :

- वृद्धिशील ऋण में, उद्योग क्षेत्र का हिस्सा वर्ष 2010 में 44.4 प्रतिशत था। वही प्रवृत्ति जारी रखते हुए वर्ष 2011 में भी उद्योग क्षेत्र ने 35.2 प्रतिशत तक मुख्य हिस्सा बरकरार रखा है।
- कृषि क्षेत्र ने वृद्धिशील ऋण 2011 में 9.7 प्रतिशत ग्रहण किया जो वर्ष 2010 में 16.3 प्रतिशत था।
- व्यक्तिगत ऋण का हिस्सा वृद्धिशील ऋण में 15.2 प्रतिशत रहा जो तुलना में पिछले वर्ष में 1.1 प्रतिशत दर्ज था। आवास ऋण 5.4 प्रतिशत रहा जो पिछले वर्ष 4.3 प्रतिशत था।
- वृद्धिशील ऋण में व्यावसायिकों को दिये गये ऋण का हिस्सा वर्ष 2010 के 11.4 प्रतिशत से 8.6 प्रतिशत तक घट गया।

8. बैंक ऋण का आकार के अनुसार वितरण :

- कुल खातों की संख्या में, लघु उधार खातों की (जिनकी ऋण सीमा ₹ 0.2 मिलियन तक है) संख्या ने 2010 के 86.5 प्रतिशत की तुलना में इस वर्ष 84.6 प्रतिशत का योगदान दिया है जबकि लघु उधार खातों का बकाया ऋण में हिस्सा 2010 के 10.8 प्रतिशत की तुलना में इस वर्ष 9.4 प्रतिशत है। (सारणी सं. 1.12)

- ₹ 250 मिलियन से अधिक की ऋण सीमा वाले खातों ने 2011 की 47.3 प्रतिशत की बकाया राशि में अंशदान दिया है, जो पिछले वर्ष के 43.7 प्रतिशत से ज्यादा है।

9. बैंक ऋण पर ब्याज दर :

- ब्याज दर सीमा (जिन खातों की ऋण सीमा ₹ 0.2 मिलियन से अधिक है) के अनुसार बकाया ऋण का वितरण यह व्यक्त करता है कि 6-12 प्रतिशत की सीमा में बकाया राशि का उच्चतम समानुपात 54.4 प्रतिशत था। (सारणी सं 1.13)

- ₹ 0.2 मिलियन से ऊपर की ऋण सीमा के सभी ऋणों और अग्रिमों का भारित औसत ब्याज दर (वेटेड एवरेज इंटरेस्ट रेट) मार्च 2011 के अंत में 11.4 प्रतिशत रहा है जो पिछले वर्ष 10.5 प्रतिशत था।

कुल जमाराशियां :-

10. कुल जमाराशियों में वृद्धि :

- 2011 में कुल जमाराशियां 18.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए ₹ 53,895,513 मिलियन हो गई। पिछले वर्ष यह वृद्धि 16.3 प्रतिशत की थी (सारणी सं. 1.18)

- 2011 में जमाराशि खातों की संख्या 10.2 प्रतिशत से बढकर ₹ 810 मिलियन हो गई जो कि मार्च 2010 में ₹ 735 मिलियन थी।

11. जमाराशियों का बैंक समूहवार वितरण :

- 2011 में कुल बैंक जमाराशियों में राष्ट्रीयकृत बैंकों का हिस्सा 53.2 प्रतिशत रहा जो 2010 में 51.9 था। भारतीय स्टेट बैंक और उसके सहयोगी बैंकों का हिस्सा वर्ष 2010 के 22.3 प्रतिशत की तुलना में वर्ष 2011 में 21.4 प्रतिशत हो गया।

- 2011 में राष्ट्रीयकृत बैंकों की जमाराशियों में 21.1 प्रतिशत की उच्चतम वृद्धि दर्ज की गयी है। इसका अनुसरण करते हुए निजी क्षेत्र के बैंको ने 20.5 प्रतिशत तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको ने 15.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है।

12. जमाराशियों के प्रकार :

- कुल जमाराशियों में मीयादी जमाराशियों का हिस्सा वर्ष 2010 के 60.8 प्रतिशत से नाममात्र घटकर वर्ष 2011 में 60.4 प्रतिशत हुआ। चालू तथा बचत (करंट और सेविंग्स) जमाराशियों के हिस्से 2011 में क्रमश: 12.4 प्रतिशत और 27.2 प्रतिशत रहे जो वर्ष 2010 में 12.2 और 27.0 प्रतिशत थे। (सारणी सं. 1.18)

13. मीयादी जमाराशियों की परिपक्वता का स्वरुप (मैच्यूरिटी पैटर्न) :

- कुल मीयादी जमाराशियों में, 5 वर्ष और इससे अधिक की मूल परिपक्वता (ओरिजिनल मैच्यूरिटी) की अवधि वाली मीयादी जमाराशियों का हिस्सा पिछले वर्ष के 8.3 प्रतिशत की तुलना में वर्ष 2011 में बढकर 8.8 प्रतिशत हो गया है। तथा 1 वर्ष से अधिक और 2 वर्ष से कम की परिपक्वता की और 2 वर्ष से अधिक

और 3 वर्ष से कम की परिपक्वता की अवधि वाली जमाराशियों का हिस्सा क्रमश: पिछले वर्ष के 37.9 प्रतिशत से बढकर 40.8 प्रतिशत हो गया और पिछले वर्ष के 12.3 प्रतिशत से बढकर 12.8 प्रतिशत हो गया। (सारणी सं. 1.24)

14. मीयादी जमाराशियों पर ब्याज दर :

- 2011 में मीयादी जमाराशियों का भारित औसत (वेडेट एवरेज) ब्याज दर 8.3 प्रतिशत रहा जो मार्च 2010 में 7.0 प्रतिशत था। (सारणीं सं. 1.28)

- कुल जमाराशियों में 6 प्रतिशत से कम ब्याज दर वाले मियादी जमाराशियों का हिस्सा 2011 में कम होकर 7.8 प्रतिशत हो गया जो पिछले वर्ष 24.0 प्रतिशत था। इसके अतिरीक्त 6 से 8 प्रतिशत का ब्याज दर वाली जमाराशियों का हिस्सा 31.4 प्रतिशत (2010 के 48.8 प्रतिशत की तुलना में) और 8 से 10 प्रतिशत ब्याज दर वाली जमाराशियों का हिस्सा 44.6 प्रतिशत (2010 के 19.1 प्रतिशत की तुलना में) हो गया। (सारणी क्र. 1.28)

ऋण जमाराशि (सी-डी) अनुपात :-

(ऋण की मंजूरी तथा उपयोग के स्थान के अनुसार)

15. जनसंख्या समूह के अनुसार (सी-डी) अनुपात

- अखिल भारतीय ऋण-जमाराशि (सी-डी) अनुपात 2011 में 75.6 प्रतिशत हो गया जो 2010 में 73.3 प्रतिशत था।

- ग्रामीण क्षेत्र में, जनसंख्या समूहवार सी-डी अनुपात, ऋण की मंजूरी की जगह के अनुसार, मार्च 2011 में 60.0 प्रतिशत था जो 2010 में 59.3 प्रतिशत था। अर्ध शहरी और शहरी क्षेत्र का सी-डी अनुपात 2011 में क्रमश: 53.2 तथा 61.6 प्रतिशत था जो पिछले वर्ष 52.1 प्रतिशत और 59.1 प्रतिशत था।

- ग्रामीण, अर्धशहरी और शहरी क्षेत्रों में ऋण के उपयोग के स्थान के अनुसार सी-डी अनुपात 2011 में क्रमश: 79.6 प्रतिशत, 63.1 प्रतिशत, और 70.2 प्रतिशत था जो पिछले वर्ष क्रमश: 91.6 प्रतिशत, 59.9 प्रतिशत और 62.8 प्रतिशत था। महानगरी केंद्रो में मंजूरी तथा उपयोग के स्थान के अनुसार सी-डी अनुपात 2011 में क्रमश: 88.4 और 79.9 प्रतिशत दर्ज रहा जो पिछले वर्ष क्रमश: 85.9 प्रतिशत और 77.4 प्रतिशत था। (सारणी सं. 1.6)

16. बैंक समूहवार सी-डी अनुपात

- स्टेट बैंक और उसके सहयोगी बैंकों का सी-डी अनुपात 2011 में 77.3 प्रतिशत रहा जो पिछले वर्ष 75.9 प्रतिशत था। राष्ट्रीयकृत बैंकों का सी-डी अनुपात 75.9 प्रतिशत रहा जो पिछले वर्ष 73.5 प्रतिशत था।

- 2011 में विदेशी बैंकों (85.0 प्रतिशत), क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (59.9 प्रतिशत) और नीजी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (74.7 प्रतिशत) का सी-डी अनुपात पिछले वर्ष की तुलना में (जो क्रमश: 72.9 प्रतिशत, 58.3 प्रतिशत और 72.7 प्रतिशत था) बढ़ गया है।

17. भारत के राज्यों में ऋण का स्थानांतरण :

- भारत के राज्यों में ऋण के स्थानांतरण का विश्लेषण ऋण और जमाराशि (सी-डी) अनुपात के द्वारा ऋण की मंजूरी की जगह तथा ऋण के उपयोग की जगह के अनुसार किया गया है। (सारणी सं. 1.7 और चार्ट 3)

- ऋण के उपयोग के स्थान के अनुसार हरियाणा, पंजाब, गुजरात, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, और तमिलनाडू का सी-डी अनुपात, ऋण की मंजूरी के स्थान की तुलना में अधिक था जबकि महाराष्ट्र, और दिल्ली का सी-डी अनुपात, ऋण के उपयोग के स्थान के अनुसार कम था।

- 2010 की तुलना में हरयाणा, पंजाब, दिल्ली और सिक्किम में उपयोग की जगह के अनुसार सी-डी अनुपात काफी बढ़ गया है जबकि उत्तर-पूर्वी राज्यों में सी-डी अनुपात में मामूली गिरावट आयी है।

****

चार्ट 3 : राज्यवार ऋण जमाराशि अनुपात, मार्च 2011